Manojavam Marut Tulya Vegam Lyrics

मनोजवं मारुततुल्यवेगं
जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठ ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं
श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ।

Manojavam marutatulyavegam
jitendriyam buddhimatam varishtha |
vatatmajam vanarayuthamukhyam
shriramadutam sharanam prapadye |

(मैं श्री हनुमान की शरण लेता हूं)
जो मन और वायु के समान तीव्र है, जो इंद्रियों के स्वामी हैं, और उनकी उत्कृष्ट बुद्धि, विद्या और ज्ञान के लिए विख्यात हैं, जप पवन देव के पुत्र है और वानरों में प्रमुख है, मैं श्री राम के दूत को दण्डवत प्रणाम करके उनकी शरण में जाता हूँ ।

(I take shelter of Shri Hanuman)
Who is as quick as the mind and the wind, One who is the master of the senses, and is noted for his excellent wisdom, learning and intelligence, Who is the son of the wind god and is the chief among the apes, I bow down to the messenger of Shri Ram and go to his refuge.

eAstroHelp